गणेशजी का रोज़ा

गणेश जी का रोज़ा एक फिल्म है। इसे शासकीय कन्या माध्यमिक स्कूल पिपलानी, भोपाल के बच्चों द्वारा बनाई गई है। इस काम में इसी स्कूल के एक शिक्षक आशीष भवालकर की अहम भूमिका रही है। फिल्म की कहानी कुछ यूँ है – हर साल की तरह बच्चे अपने-अपने मोहल्ले में गणेश की प्रतिमा रखने की बात करते हैं। चाँद उनके साथ ही पढ़ता है। वह झाँकियों को सजाने में उस्ताद है। हर बच्चा चाहता है कि इस बार वह पहले उसके मोहल्ले का मण्डप सजाए। अब यह तो मुमकिन नहीं है। चाँद ही सुझाता है कि क्यों न इस बार सब बच्चे मिलकर स्कूल में ही गणेश उत्सव मनाएँ। जिन दिनों गणेश उत्सव चल रहा है उन्हीं दिनों रमज़ान भी हैं। चाँद जब रमज़ान की खरीदी के लिए जाता है तो वह गणेश जी की झाँकी के लिए भी सजावट का सामान खरीद लेता है। और फिर तैयारी होती सुन्दर से सुन्दर झाँकी बनाने की।

सब चाहते हैं कि गणेश जी की ऊँची से ऊँची मूर्ति खरीदी जाए। वे मूर्तियाँ देखने बाज़ार जाते हैं। सभी खतरनाक रासायनिक रंगों से सजी हैं। तो क्या करें? सब फैसला करते हैं कि वे खुद मूर्ति बनाएँगे और उसे प्राकृतिक रंगों से रंगेंगे।

पहली आरती होती है। तभी पता चलता है कि प्रसाद तो लाना ही भूल गए। कोई बच्चा कहता है कि इस आयोजन में चाँद ने बहुत मेहनत की है। लगता है गणेश जी उसके साथ रोज़ा रखना चाहते हैं। सब बच्चे चाँद के साथ रोज़ा रखते हैं। और वे तय करते हैं कि शाम को सब मिलकर गणेश जी के साथ रोज़ा अफ्तारी करेंगे। शाम को जैसे ही तोप की आवाज़ के साथ रोज़ा अफ्तारी का संदेशा मिलता है सब बच्चे गणेश जी की मूर्ति के सामने आ जुटते हैं। चाँद गणेश जी का रोज़ा मोदक का भोग लगाकर खोलता है। और फिर सब बच्चे मोदक से रोज़ा खोलते हैं।

फिल्म आठवीं के बच्चों ने बनाई है। कैमरे से लेकर अभिनय तक बच्चों ने ही किया है। यह काबिले-तारीफ है। प्रेम और दोस्ती से रहने और मिलकर काम करने के मज़े पर यह फिल्म केन्द्रित है। जानते हो इस फिल्म को बनाने में कुल कितने रुपए खर्च हुए – सिर्फ 700 रुपए!

पर, इसकी कुछ बातें खटकती हैं। एक तो इस फिल्म के लगभग हर शॉट में कुछ न कुछ सीखने का दवाब-सा बनाया गया है। फिल्म में चाँद को एक खास टोपी पहने दिखाया गया है। क्या चाँद टोपी पहनकर स्कूल आता है? चाँद मुसलमान है इस बात को और पुख्ता करने के लिए उसके साथी उसे चाँद की जगह चाँद मियाँ कहते हैं। चाँद मुसलमान होकर भी गणेश उत्सव में इतना बढ़-चढ़कर भाग ले रहा है। इस बात को फिल्म में ज़रूरत से ज़्यादा उभारा गया है। जब बच्चे आरती करने को होते ही हैं कि चाँद कहता है कि एक चीज़ तो भूल ही गए। सब आश्चर्य से देखते हैं। इस पर वह तिरंगा निकालकर गणेशजी के मण्डप पर लगा देता है। इससे संवादों में बनावटीपन साफ झलकता है।

इस फिल्म को तुम www.youtube.com पर देख सकते हो।